क्या तू तंदुरुस्त होना चाहता है?

kyā tū tandurust honā chāhtā hai?

Do You Want to be Healed?

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 10]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of
Katamaheen https://pixabay.com/illustrations/grass-vegetation-green-easter-soil-7840326/; R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/rg-lame-man/

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है? 2

नुकताचीनी का मज़ा 3

फिर गुनाह न करना 4

बाप की मरज़ी सब कुछ है 5

ख़ुदावंद हमें अबदी ज़िंदगी देता है 6

इंजील, यूहन्ना 5:1-29 8

यरूशलम में एक मशहूर हौज़ बनाम बैत-हसदा था। इस हौज़ के खंडरात आज तक देखे जा सकते हैं। हौज़ पाँच बड़े बरामदों से घिरा हुआ था। उनमें बेशुमार अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पड़े रहते थे।

► **इतने माज़ूर लोग वहाँ क्यों जमा रहते थे?**

कभी-कभार हौज़ का पानी थोड़ी देर के लिए हिलने लगता था। उस वक़्त जो भी पहले पानी में जाता उसे शफ़ा मिलती थी।

एक दिन ख़ुदावंद ईसा वहाँ से गुज़रा। उसने एक आदमी को फ़र्श पर पड़ा देखा जो 38 साल से माज़ूर था।

अब सोच लें : वहाँ तो भीड़ ही भीड़ थी। फिर भी ईसा मसीह ने एक ही आदमी पर निगाह डाली और उसी पर रहम किया।

► **क्यों? उसने दूसरों को शफ़ा क्यों न दी?**

वह जानता था कि यह आदमी बहुत सालों से माज़ूर है। फिर भी यह एक राज़ है कि ख़ुदा एक को शफ़ा देता है और दूसरे को नहीं। मसीह ने पूछा,

क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?

► यह कैसा सवाल है? कौन तनदुरुस्त नहीं होना चाहता? ईसा मसीह यह क्यों पूछता है?

ख़ुदावंद ईसा कभी ज़बरदस्ती नहीं करता। ज़रूरी है कि हम उसकी मदद क़बूल करें। कि हम उसे अपनी ज़िंदगी में आने दें। हम इनकार तो कर सकते हैं।

► आज ख़ुदावंद ईसा हम सबसे पूछ रहा है कि क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है? हम क्या जवाब देंगे? क्या हम अपना मुँह फेरकर अंधेरे में रहना पसंद करेंगे? या हम उसके नूर में आकर तनदुरुस्त हो जाएँगे?

वह आदमी बोला, "ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।"

ईसा मसीह ने कहा, "उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!"

वह आदमी एकदम ठीक हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

जो हुक्म ख़ुदावंद ईसा देता है वह हमेशा पूरा हो जाता है।

नुकताचीनी का मज़ा

कुछ लोगों ने देखा कि यह आदमी फिर रहा है तो सख़्त नाराज़ हुए। कहने लगे, “आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”

सबत, हफ़्ते का दिन था। ख़ुदा ने मूसा नबी को फ़रमाया था कि सबत के दिन काम-काज मत करना। मक़सद यह था कि लोगों को इस दिन नौकरी से छुट्टी मिले। मगर बाद में यहूदी उस्तादों ने बेशुमार और पाबंदियाँ लगाई थीं। बिस्तर उठाकर घर ले जाना भी मना था। अब यह बेचारा क्या करे? उसे तो घर पहुँचना ही पहुँचना था।

► क्या इन लोगों को माज़ूर की फ़िकर थी?

इन लोगों को परवा ही नहीं थी कि इस आदमी को शफ़ा मिली है, कि इतना बड़ा मोजिज़ा हुआ है। कितना अफ़सोस! यह कट्टर लोग मज़हब के नाम में बहुत सख़्त हो गए थे। मज़हब का क्या फ़ायदा अगर हम ख़ुदा से दूर हों? अगर एक दूसरे से मुहब्बत न हो?

► क्या आप ऐसे लोगों से वाक़िफ़ हैं?

आदमी घबरा गया। वह बोला, “एक आदमी ने मुझे शफ़ा दी। उसी ने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर।’”

उन्होंने सवाल किया, “वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?” लेकिन उस आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा मसीह हुजूम में ग़ायब हो गया था।

फिर गुनाह न करना

बाद में ईसा मसीह उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, "अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।"

कमाल है। माज़ूर की हालत तो ठीक हो गया था। लेकिन ख़ुदावंद इनसान के दिल में देखता है। उसे मालूम था कि बीमारी की ज़हरीली जड़ बाक़ी रह गई थी। यह जड़ अब तक ख़त्म नहीं हुई थी।

► **जड़ क्या थी?**

गुनाह। हम नहीं जानते कि उसने क्या गुनाह किया था। मगर मसीह को मालूम था। हर बीमारी तो किसी ख़ास गुनाह की वजह से नहीं होती। लेकिन मसीह जानता था कि इस मरज़ के पीछे एक संजीदा गुनाह है।

► **सो ख़ुदावंद ईसा का ख़ास ध्यान किस चीज़ पर थी?**

गुनाह पर। आदमी की रूहानी हालत पर।

ख़ुदावंद ईसा चाहता है कि हमारी अंदरूनी हालत बहाल हो जाए। इस दुनिया में रहते हुए हमारी हालत नाज़ुक रहती है। हम बीमार हों न हों, बड़ी बात यह है कि हम फिर गुनाह न करें। कि हम ख़ुदावंद के क़दमों में बैठे रहें। उसकी बातें सुनते रहें। उसके पीछे चलते रहें। तब ही हम अंदर से बहाल हो जाएँगे।

► **आपका क्या ख़याल है कि उस आदमी ने जवाब में क्या किया?**

वह कमबख़्त सीधे यहूदी बुज़ुर्गों के पास गया और उन्हें इत्तला दी, “ईसा ने मुझे शफ़ा दी।” यह सुनकर वह ख़ुदावंद ईसा को सताने लगे।

ख़ुदावंद ईसा ने उस आदमी को न सिर्फ़ शफ़ा दी थी। उसने उसे अपने गुनाहों से बहाल होने का मौक़ा भी दिया था।

► **फिर भी उसने क्या किया?**

उसने उसके रहम को हक़ीर जाना।

► **जब ख़ुदावंद ईसा हमसे हमकलाम होता है तो मेरा क्या जवाब है? आपका क्या जवाब है?**

बाप की मरज़ी सब कुछ है

► **जब बुज़ुर्ग ख़ुदावंद को सताने लगे तो उसने जवाब में क्या कहा?**

उसने फ़रमाया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।”

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

ख़ुदा बाप हर वक़्त काम करता है। लमहा बलमहा वह दुनिया की हर चीज़ क़ायम रखता है वरना हम सब एकदम ख़त्म हो जाते। यों उसका काम सबत के दिन भी जारी रहता है। ख़ुदावंद ईसा फ़रमाता है कि इसी लिए मेरा काम सबत के दिन भी जारी रहता है। मैं ख़ुदा का फ़रज़ंद हूँ इसलिए ज़ाहिर है कि मैं रोज़ाना उसकी मरज़ी पूरी करता हूँ।

यहूदी बुज़ुर्ग और ज़्यादा बिफर गए।

► **क्यों?**

उनके नज़दीक उसने अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

► **कैसे?**

उसने फ़रमाया था, जिस तरह ख़ुदा बाप सबत के दिन काम करता है उसी तरह मैं भी करता हूँ।

लेकिन ईसा मसीह एक और बात कहना चाहता है। यह कि मैं पूरे तौर से बाप की मरज़ी करता हूँ। मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं करता। उसी की मरज़ी थी कि मैं सबत के दिन उस आदमी को शफ़ा दूँ। इसलिए मैंने उसे शफ़ा दी। अपनी मरज़ी से नहीं। उसी की मरज़ी से।

► **हमारा इससे क्या वास्ता है?**

ख़ुदावंद हमें अबदी ज़िंदगी देता है

मसीह ने बुज़ुर्गों से कहा,

> जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है।
> (इंजील, यूहन्ना 5:21)

और यह ज़िंदगी इसी दुनिया में मिल सकती है।

मसीह की यह ज़िंदगी अनाज के एक दाने की तरह है। यह दाना देखने में मामूली-सा लगता है।

► **इसे ज़मीन में दबा दिया तो क्या होता है?**

बीज गल जाता है।

► **क्या गल जाने से उसकी ताक़त और ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है?**

नहीं। एक दिन ज़मीन से पौधा उग आता है जो बढ़ता बढ़ता फल लाता है।

► **मैं इससे क्या कहना चाहता हूँ?**

उस मामूली से बीज में पौधे की पूरी ताक़त और ज़िंदगी समाई हुई है। बीज गल जाता है मगर उसकी यह ताक़त और ज़िंदगी ख़त्म नहीं होती। उस ज़िंदगी से एक शानदार पौधा पैदा हुआ। बिलकुल इसी तरह वह ज़िंदगी है जो मसीह हमें देता है। जब हम ईमान लाते हैं तो हमारे अंदर अबदी ज़िंदगी का बीज बोया जाता है। एक दिन हमारा जिस्म तो गल जाएगा। मगर हम ख़ुद ख़त्म नहीं होंगे। हमारे अंदर की यह अबदी ज़िंदगी हमें ख़ुदा की नज़र में मंज़ूर कराएगी। तब हमें एक नया जिस्म मिलेगा जो इस दुनियावी जिस्म से कहीं बेहतर होगा। ऐसे शख़्स के बारे में ख़ुदावंद मसीह फ़रमाता है,

> उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है। (इंजील, यूहन्ना 5:24)

► **क्या आपके अंदर अबदी ज़िंदगी का यह बीज है?**

इंजील, यूहन्ना 5:1-29

कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के मौक़े पर यरूशलम गया। शहर में एक हौज़ था जिसका नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े के क़रीब था जिसका नाम 'भेड़ों का दरवाज़ा' है। इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पानी के हिलने के इंतज़ार में रहते थे। [क्योंकि गाहे बगाहे रब का फ़रिश्ता उतरकर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त उसमें पहले दाख़िल हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी ख़ाह उसकी बीमारी कोई भी क्यों न होती।] मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था। जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उसने पूछा, "क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?"

उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।"

ईसा ने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!” वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

यह वाक़िया सबत के दिन हुआ। इसलिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया, “आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”

लेकिन उसने जवाब दिया, “जिस आदमी ने मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर।’”

उन्होंने सवाल किया, “वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?” लेकिन शफ़ायाब आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा हुजूम के सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।

बाद में ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।”

उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को इत्तला दी, “ईसा ने मुझे शफ़ा दी।” इस पर यहूदी उसको सताने लगे, क्योंकि उसने उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था। लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।”

यह सुनकर यहूदी उसे क़त्ल करने की मज़ीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ़ सबत के दिन को मनसूख़ क़रार दिया था बल्कि अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही फ़रज़ंद भी करता है, क्योंकि बाप फ़रज़ंद को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी अज़ीम काम दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे। क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं। जो फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उसकी है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से

निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है। मैं तुमको सच बताता हूँ कि एक वक़्त आनेवाला है बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद की आवाज़ सुनेंगे। और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा हो जाएँगे। क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद को ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। साथ साथ उसने उसे अदालत करने का इख़्तियार भी दे दिया है, क्योंकि वह इब्ने-आदम है। यह सुनकर ताज्जुब न करो क्योंकि एक वक़्त आ रहा है जब तमाम मुरदे उसकी आवाज़ सुनकर क़ब्रों में से निकल आएँगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी उठकर ज़िंदगी पाएँगे जबकि जिन्होंने बुरा काम किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत की जाएगी।